

पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्त्तनेन ॥ शत्रुं विनश्यति धनं
जयकीर्त्तनेन ॥ माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगा ॥ २ ॥
लोमहर्षणलेभंदाभया ॥ सुविधिरकानामलिया धर्म
वर्द्धति होला ॥ भीमसेनकानामलिया सर्वपापनाशदं
क ॥ अर्जुणकानामलिया शत्रुकोनाशदं क ॥ नकुल
सहदेवकानामलिया निरोगिहोला ॥ ३ ॥ **हौ वाच ॥** ये मा
नवाविगतशयशयशयराज्ञा ॥ नाशयणं सुरगुरुं शततं
रन्ति ॥ ध्यानेन तेन हतं किं विषयेतनात्ते ॥ मातृपयोध

॥ पादौ ॥
॥ २ ॥

हरसंनयनार्थिप्रतिः ॥ ३ ॥ वं ह्ना (मन्त्रा) ॥ ॥ ॥ ॥
अथ पादमतिहवेन तव श्रेयसमार्थिजानला ॥ ॥ ॥
रुला रादृगकोनाम दि न प्रति स्मरण ध्यानागती तव
तत्को अशोरनाम भयापनि ॥ ॥ ॥ तव गहोला महानाथिको
गर्भवासवाहिंदैनं ॥ ॥ ॥ इदु उवाच ॥ नाश एणो
नामनरोनराणां प्रसिद्धचौरक धेतपृथिव्यां ॥ ॥ ॥ अनेक
जन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मृतमात्र एव ॥ ॥ ॥
नुले मंदाभया ॥ कश्चैले नारायण को नाम धोपृथिव्या

॥ राम ॥
॥ २ ॥

सुपात्रमनुष्यले निश्चयगरिनाशयण को स्मरणगर्भा
कण अनेकजन्म महा अनेकपापगत्या को सवेनासहो
ला हरिकोनामलिया निश्चयनारायण संतुष्ट डं डं न य
ता श्री कृष्ण नारायण को भक्तगर्नु सिद्धले ॥ ॥ ॥ युधिष्ठिर
उवाच ॥ मेघस्था मंथीत को सेयवासं श्री वत्सांक कौतुभेद्रा
सितांग ॥ पुण्योपेतं मुंडरी कायताक्षं विष्णु वन्दे सर्वलोकै
कनाथं ॥ ५ ॥ युधिष्ठिर ले मंदाभया ॥ मेघजलो कालो व
र्ण धितव्य लाई ॥ ॥ ॥ कर्तुरिमणि मय को मालालाई

॥ पा. लै॥

॥ ३॥

दह्या. पुण्य शरीर कमल पत्र जलाने. त्रि. नदन काना
थ. यत्ता परमेश्वर नाशयण कोन मत्कार ॥ ॥ भीमसे
न उवाच ॥ जलो यमना सच राच राधरा. विखान को द्या.
दिल विख सृष्टिना ॥ समुद्र ता येन वरा हरु पिना. समेश्व
यं भू भगवान् प्रसिद्ध ॥ ॥ भीमसेन ले भन्या ॥ जौ ना वि
सुले वाराह भवतार ली कण हिरण्यो दैत्य मोचन गन्या
पाता लै पृथिवि ~~वि~~ ले उवाली ल्या या. उजै विहृ ले म
कण दया प्रसन्न कुच हवस ॥ ॥ अर्जुण उवाच ॥ अचिं

॥ राम ॥

॥ ३॥

दोहा २

त्यम व्यक्तमनंतमव्ययं. विभुं प्रभुं भावित विख भावनं ॥
त्रैलोक्य विस्तार विचार कारकं. हरिं प्रयत्नोत्तिगतिं महा
त्माणां ॥ १ ॥ अर्जुण ले भन्या ॥ विष्णु को चित्त नागर्तु महा
गाद्रोक्. व्यक्त न भया का कै ह्ये अनन्य रूप. कह्ये गोविन्द
रूप. कै ह्ये केशवरूप. दिन मानाण रूप धारणा गर्भा.
प्रभू काल मायनि. नाना रूप गरिव दह्या. त्रैलोक्य विस्तार
गरिवि भाग गार्थी. साधु सज्जन कण गति दिग्गज. य
त्ता हरि को शरण हवस ॥ ॥ नकुल उवाच ॥ यदि गम

॥ यः ॥

॥ ४॥

नमधस्तात्कालुषासानुबंधा-मदिवकुलदिहीनेजायते
मलिकीरे ॥ कृमिशतमपिगताध्यायतेचान्नशात्मा-ममभ
वतुहृदिस्थोकेशवेभक्तिरेका ॥ ८ ॥ नकुललेभन्या ॥ कदा
चित्पुर्वजन्मकायापलेनर्कभोगहोला-तस्यार्थदेयरभेश्व
र-मेराहृदयमाप्रभूवस्तुहवस-मयेकभक्तहोला ॥ ॥
सहदेवउवाच ॥ तस्ययशवराहस्य-विहोरतुलतेजस ॥
प्रणमंयेप्रकुर्वन्ति-तेषामपिनमोनमः ॥ २ ॥ सहदेवले
भन्या ॥ यहितेजस्विशराहकोनमस्कारगरौ-यहि

॥ रामः ॥

॥ ४ ॥

नमस्कारहो ॥ ॥ कुंतीउवाच ॥ स्वकर्मफलनिर्दिष्टां-
यांयांयोनिंव्रजाम्यहं ॥ तस्यांतस्यां हृषिकेश-त्वयुभक्ति
दृष्टास्तुमे ॥ १० ॥ कुतिलेभनिं ॥ आकाशकर्मकोफलविद्या
रगरिकण-कौजातमाजन्मकुं-तत्वेलामाताहायनिवि
स्तुभक्तिगर्तु ॥ ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ कश्मेरताकुलम
नुस्मरंति-रात्रोचकुलं पुनरुत्थिताय ॥ तेभिन्नदेहाप्रवि
सन्ति कुल-हविर्यथासंत्रुतं तद्रतास ॥ ११ ॥ मार्कण्डेय
लेभन्या ॥ कश्मेलेश्रीकुललायि योयुतिसंगभलानाग

॥ पाण्डौ ॥

॥ ५ ॥

ला. रातदिनै. सुता मायनि. उठना मायनि. परमेश्वरको
नाम सृजि ध्यान भक्त गली. तस्य नुष्य कण. मोक्ष हो
ला. जसो गरि यज्ञ मा हो मगर्दा. विउपगलं क. तसै गरि या
पयनि पगि जाला. सत्य सत्य हो ॥ **॥ दौपयुवाच ॥** की
टेषु पक्षिषु मृगेषु सरीसृपेषु. रक्षयिशाचमनुजेष्वपि
यत्र तत्र ॥ जातस्य मे भवतु केशव त्वत्प्रसादा. त्वजैव भक्ति
रक्षलाद्यभिचारिणि च ॥ १२ ॥ **दौपयुलेभनिं ॥** परमेश्व
रहे श्रीकृष्ण. सकल कीट पदंग विलसत्स. पितृ सा च म

॥ राम ॥

॥ ५ ॥

नुष्य आदि मा. जाहा जाहा जन्म होला. बाहा बाहानि श्रय
ज्ञान ले. तस्य चरण मा प्रणम गन्ता. भक्त महा विप्र गणा
शक्य न्या गरि प्रसन्न भया जावत ॥ **॥ शुभद्रा उवाच ॥** ये
कोपि कृष्णस्य कृतप्रणमो. दशाश्वमेधावसृथेन तुल्यं
॥ दशाश्वमेधिपुनरेति जन्म. कृष्णप्रणमि न पुनर्भवा
ये ॥ १३ ॥ शुभद्रा लेभनिं ॥ कोहि मनुष्य ले. श्रीकृष्ण प्रण
म गणा. तस्य नुष्य कण. दशाश्वमेधि यज्ञ गन्ता चाहि
पनि. पाण्डौ गीता पाठ गरि. गोविन्द को भजन गन्ता

॥ पाण्डे ॥

॥ ६ ॥

वडो पुंण्य ॥ मूर्खले गोविन्द को भजन छाडि यशदान
नीर्थ जात्रा गर्नु भंछ गोविन्द भजन शक्या हे रै पुण्य ॥ दशा
श्रमे धय गार्थ पुन के रिज नम दुंछ श्री कृष्ण को प्रणाम
गार्थ कण पुन गर्भ वास कै न ॥ ॥ अभिसंन्युवाच ॥
गोविन्द २ हरे मुरारे गोविन्द २ मुकुन्द कृष्ण गोविन्द
२ रथांगयाने गोविन्द २ नमात्य जेथा ॥ १५ ॥ अभिसंन्यु
ले भज्या ॥ हे गोविन्द हे हरे मुरारे हे मुकुन्द हे कृष्ण हे च
क्रधर तिमाचरण को दिन प्रति निदान नमस्कार गण

॥ रामः ॥

॥ ६ ॥

दया प्रसन्न भया जावस ॥ ॥ धृष्ट युज उवाच ॥ श्री रा
मनाशायण वासुदेव गोविन्द वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्णः ॥
श्री केशवानन्त नृसिंह विष्णो मात्रा हि सन्सार भुजगा
दम् ॥ १५ ॥ धृष्ट युज ले भज्या ॥ हे रामनाशायण हे वासु
देव हे गोविन्द हे मुकुन्द हे कृष्ण हे केशव हे अनन्त
हे नृसिंह हे विष्णु यो सन्सार का कारण जीव रक्षा गर
॥ ॥ सात्यकुवाच ॥ अग्र मेयो हरे विष्णो कृष्णदा मोद
रायुत ॥ गोविन्दानन्द सर्व स वासुदेवन मोक्षुते ॥ १६ ॥

॥ वा एडौ ॥

॥ ७ ॥

सात्यकुलोवर्तमाना कथा ॥ यरमेश्वरकारुण्यगुणकोम
हिमा अथाहाकृ. एता श्रीकृष्णदा मोदर अयुत. तन्नाच
रणकोनमस्कारकृ ॥ ॥ उद्भवउवाच ॥ वासुदेवं परि
त्यजे. यो न्यदेवमुपाशते दधितो जां द्धवीतीरे. कूपं म
नति दुर्मति ॥ १७ ॥ ॥ उद्भवेभन्या ॥ कोहि मनुष्यले. श्रीकृ
ष्णकण छडि. अरु देवता को सेवा गर्ह. खमूर्ख हो. गंगा
को तीर मा वसि. कूपतु ल्याई कूपतो प्राणि प्रायाज हो ॥
॥ धौम्यउवाच ॥ अथांशमिपे शयनाशमति दिवा च रात्रौ

॥ राम ॥

॥ ७ ॥

चयथादिगच्छतां ॥ यदिति किं वित्सुकृतं कृतं मया ज
नार्दन तेन कृतेन तुष्यतु ॥ १८ ॥ ॥ धौम्यलेभन्या ॥ पाणि
कासमीषमा. वस्यामा वाटमा. घरमा भयो. दिनप्रति.
तमेन नमस्कारगत्या कोक. उहि धर्म विचारि हे यरमेश्व
र. तन्नाचरण मानमस्कारकृ. संतुष्ट दुनु होला ॥
॥ संजयउवाच ॥ आर्त्ता विषयनाशि थिला श्रुभीता. दोरेषु
वा आदिषु वर्तमाना ॥ सैकी र्थनाशायण शब्द मात्रं. विमु
क्तुः स्वासुखिनो भवन्ति ॥ १९ ॥ ॥ संजयलेभन्या ॥ कोहि

॥ पाण्डे ॥
॥ ८ ॥

मनुष्यदुःखी आलस्य विपत्तिदुःखपयाकाकण रोगिभ
यापनि हरिकोनामलियापदि दुःखशोकनाशभै सु
खीहोला ॥ ॥ अत्र उवाच ॥ अहमस्मिन्नारायणदा
सदासदासदासदासदासदास ॥ अन्यभ्यर्च्य जगतो
नराणां तस्मादहंधन्यत्र रोमिलोके ॥ २० ॥ अत्र लेवि
तिगया ॥ हेनारायण तम्रावरणका दासको दासमकुं
मलाई गतिवक्तनुहवत्स धन्यमेशोभाश तपात्रीकाव
रणको दर्शनपान्ना ॥ ॥ विदु उवाच ॥ वासुदेवस्य ये

॥ राम ॥
॥ ८ ॥

भक्ता शान्तास्तद्वतमानस ॥ तेषां दासस्य दासोहं भवेज
न्मनिजन्मनि ॥ २१ ॥ विदु रविंतीगर्दभया ॥ हे विष्णु भ
क्तकावशमारह न्या श्रीकृष्ण तम्रावरणको दासको दा
समकुं हे प्रभू भनि विंतिगया जन्मजन्मान्तमापनित
पात्रिका दासमकुं भन्या ॥ ॥ भीष्म उवाच ॥ विपरीतेषु
कालेषु परिशीनेषु वन्धुषु ॥ त्रहि मां कृपया कृष्ण शर
नागतवत्सल ॥ २२ ॥ भीष्म लेविंतीगर्दभया ॥ हे कृष्ण
जो विपत्तिकालमा भाई वन्धुदेवि कुद्या का समयमा

॥ पाण्डौ ॥

॥ त ॥

तस्माच्चरणमालीरक्षागर्नुचाहिं कृ. हे परमेश्वर भनि विंति
गत्या ॥ ॥ **दो ए उ वा च** ॥ ये ये हताचक्रधरे ए दैत्या. त्रैलो
कनाथेन जनार्दनेन ॥ ते ते गता विष्णुपुरिं प्रयाता. क्रो
दोपि देवस्य वरेन तुल्यं ॥ २३ ॥ **दो ए वा चार्थ ले विंति गत्या** ॥
गोपिनी नाम गत्या को दैत्य. विष्णु ले माया रउयनी स्वर्ग
वासभयो. विष्णु का क्रोध ले माया कोपनि. वरदान दि
या जहो भयो भनि. यत्ता परमेश्वर श्री कृष्ण को वारम्बा
र नमस्कार ॥ ॥ **कृ पा चार्थ उ वा च** ॥ मज्जन्मनफल

॥ राम ॥

॥ त ॥

मिदं मधुकैरभा रे. मत्प्रार्थणीय मदनुग्रह एष यवः ॥
त्वद्भृत्यभृत्यपरिवारकभृत्यभृत्य. भृत्यस्य भृत्य इति
मां स्मरलो कनाथ ॥ २४ ॥ **कृ पा चार्थ ले विंति गत्या** ॥ हे
मधुकैरभा र परमेश्वर भनि विंति गत्या ॥ जाहा जाहा हा
मो जन्म होला. वाहा वाहा तस्माच्चरणारवृन्द ले कृपा राशु
होला. एति आसा माहामि द्वौ भनि. परमेश्वर कृष्ण भौ विं
ति गत्या ॥ ॥ **अख तथा मा उ वा च** ॥ गोविंद के सब जनार्द
न वासुदेव विश्वेश विश्वमधुसूदन विश्वरूप श्रीपद्म

॥ पाण्डे ॥

॥ १० ॥

नाभयुखोत्तमपुष्कराक्ष नाशयण युतनृसिंहनमोन
मते ॥ २५ ॥ अस्त्वत्थामाभंदाभया ॥ हेगोविन्द केशव ज
नार्दन वासुदेव मधुसूदन विश्वरूप पद्मनेत्र नाश
यण अयुतनृसिंह वारम्भारतयात्रिकोचरनमानम
स्कार मेरोउद्धारगर्नुवाहिन् ॥ ॥ कर्णउवाच ॥ नान्यं
वदामिनशृणोमिनचिन्तयामि नान्यंस्मरामिनभजा
मिनचाश्रयामि ॥ भक्त्यात्तदीयचरणं वुजमादरेन श्री
श्रीनिवासपुरुषोत्तमदेहिदास्यं ॥ २६ ॥ कर्णलेखिनिग

॥ राम ॥

॥ १० ॥

॥ हेपुरुषोत्तमविष्णु मलायितपात्रिकाचरणको
दासगरिशश्रुहवस तपात्रिकाचरणारवृन्दकोसेवा
मगर्कु मेरोउद्धारगर्नुहवस ॥ ॥ धृतशकु उवाच ॥ न
मोनमकारण वामनाय नाशयनायमितविक्रमाये ॥
श्रीशङ्खचक्राशिगदाधराय नमोस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाये
॥ २७ ॥ धृतशकु लेखिनिगया ॥ प्रणामनमकारगयाका
प्रभावले वावन्नरूपमै नाशयण त्रिविक्रम रूपधरमू
र्ति शङ्खगदाचक्रधारणगर्ना यस्तपुरुषोत्तमको

॥ ए ॥
॥ ११ ॥

वारम्भारनमस्कार ॥ ॥ गाधार्युवाच ॥ त्वमेव माता च
पिता त्वमेव त्वमेव वंशु श्रुशब्दा त्वमेव ॥ त्वमेव विशाद वि
नं त्वमेव त्वमेव सर्वममदेवदेव ॥ २८ ॥ गाधार्युर्वितिगवा
मया ॥ हे प्रभू देवदेव मेरोस वै कर्मतयात्री हो पिता मा
ता भाई वधूसंगि विशाद्वय सवैतपात्रिहो मकराण्डद्वार
गरिवक्सनुहवस ॥ ॥ दुपदउवाच ॥ यज्ञेशाच्युत गोविं
न्द माधवाननन्तकेशव ॥ कृष्णविष्णो हृषिकेश वासुदेव
नमोस्तुते ॥ २९ ॥ दुपदलेनमस्कारगरिन् ॥ हे यज्ञश्रान

॥ राम ॥
॥ ११ ॥

न्दगोविन्द माधव अनन्तकेशव वासुदेव यत्तापरमेश्व
रकरा वारम्भारनमस्कार ॥ ॥ जयदुधउवाच ॥ नमस्तु
ष्णाय देवाय पुंस्त्रेण नन्तशक्रय ॥ योगिस्वराय योगाय
त्वामहं शरणं गत ॥ ३० ॥ जयदुधलेदितिगवा ॥ हे कृष्ण
उर्द्धस्वरूप परब्रह्म अनन्तमूर्ति योगेश्वर योगेश्वरूप
तपात्रिकोचरणमानमस्कार ॥ ॥ विकर्णउवाच ॥ कृ
ष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च ॥ नन्दगोपकुमा
राय गोविन्दाय नमो नम ॥ ३१ ॥ विकर्णलेदितिगवा

॥ पाण्डो ॥
॥ १२ ॥

॥ हे श्री कृष्ण गोविन्द भक्त्या कात पात्रिहो हे परमेश्वर वा
रम्बारत पात्रि कै नमस्कारक ॥ ॥ सोमदत्त उवाच ॥ नम
परमकल्याणं नमस्ते विस्व भावनं ॥ वासुदेवाय शान्ताय
यदुणां यतये नमः ॥ ३२ ॥ सोमदत्त विंतिगम्या ॥ हे प
रमेश्वर परमकल्याण विश्व भावन वासुदेव सान्तस्वरू
प यत्ना कात्वा मित पात्रिहो यत्नात पात्रि कण कोटि को
टि नमस्कारक ॥ ॥ विशद उवाच ॥ नमो ब्रह्मण्य देवाय
गौडां ह्यहो हिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय

॥ रामः ॥
॥ १२ ॥

नमो नमः ॥ ३३ ॥ विशद ले विंतिगम्या ॥ हे ब्राह्मण का भ
क्त देवता ब्राह्मण का संसार का हीत श्री कृष्ण गोविन्द
तस्माद्यवर्णमानमस्कारक ॥ ॥ शल्य उवाच ॥ अतश्ची पु
ष्पसंकासं पीतवासं समच्युतं ॥ येन मस्यात्ते गोविन्द न
तेषां विशते भयं ॥ ३४ ॥ शल्य ले विंतिगम्या ॥ तस्मात्त्रिवा
वन्न सयत्पीताम्बरयैद्विरहना अच्युत तपात्रिकावर
णमासवैले प्रणामगर्हन् तन्प्रणामिकण कशौको भ
यकै न ॥ ॥ बलभद्र उवाच ॥ कृष्णकृष्णकृष्णालोत्तम

॥ पाण्डे ॥
॥ १३ ॥

गतिनांगतिर्भव ॥ संसारार्णवमग्नाणां प्रसीदपुरुषोत्त
म ॥ ३५ ॥ **वल्लभदत्तलेखितगण्य ॥** हे श्री कृष्ण करुणाम
य यो सन्सारपपका समुद्रमावुडिरघाका मनुष्यकन
गतिः शगतिदिन्याहो ॥ **॥ श्री कृष्ण उवाच ॥** कृष्णकृष्णे
तिकृष्णेति यो मां स्मरति नित्यं स जलं भित्वा यथा यद्वा
नरकादुर्द्रशम्यहं ॥ ३७ ॥ **श्री कृष्ण उवाच ॥** आज्ञा गदाभया ॥
जोहि मनुष्यले कृष्ण भनिदिन प्रति स्मरणानामलिं न्या
काण जल्लोगरि पाणि वार्य द्वाय त्रिक्कृच्छ्रं तत्तै नर्क

॥ राम ॥
॥ १३ ॥

देवि किं किं वै कृष्ण वासदिन्याकु ॥ **॥ पुनः कृष्णः ॥** स
त्वं वीमिमनुजाख्यमुद्रवाडु यो मां मुकुन्द नरसिंह ज
नार्दनं नेति ॥ जिवन्मृत्युन दिनं मरणे रणे च पाषाण
काष्ठ सदृशाय ददाम्यभिष्टु ॥ ३७ ॥ **पुनः श्री कृष्ण उवाच ॥**
आज्ञा गदाभया ॥ हे लोकहो जज्ञे मेरो नाम मुकुन्द नर
सिंह जनार्दन भनिध्यानगर्ला तत्कण सत्यले वै कृष्ण
वासमिन्ना ॥ **॥ इश्वर उवाच ॥** सकृन्नाशयणे तुक्ता पु
मनकल्पशतत्रयं गंगादि सर्वतिथेषु स्नातो भवति

॥ पाण्डो ॥
॥ १४ ॥

पुत्रकं ॥ ३८ ॥ इश्वरले आतागत्या ॥ जशले नाशयण
कोनाम दिनप्रतिजपून्पालाई. ब्रह्माको दर्शन पाया
ये रिगंगादि सर्वतीर्थमा जान. तेरि छोरि देवताको
पूजा गरि. दर्शन पाया चाहिं पनि. श्री कृष्णको ध्यावना
गत्या बडो पुण्य छ ॥ ॥ अक उवाच ॥ तत्रैव गंगा जमु
ना च तत्र. गदावरि सिंधु सरस्वती च ॥ सर्वाणि तीर्था
निवसन्ति तत्र. यत्राच्युतो द्वारकथा प्रसंग ॥ ३९ ॥ जा
हा हरिकथा वाचि रहं न. ताहा गंगा जमुना सरस्व

॥ राम ॥
॥ १४ ॥

ती. सर्वतीर्थ ताहा आई सुनि रहं न. तव तत्त्वा उक्ता
पवित्र भूमि भन्तु. जश्ले अय पवित्र भंला. तत्क्षण नर्क वा
स होला ॥ ॥ यम उवाच ॥ नरके यमुमाने तु. यमेन य
रिभाषितं ॥ कित्वा याना चितो देव केशव क्लेश नाशनः
॥ ४० ॥ यम ले विंति गत्या ॥ जश्ले हरिकथा एक चित्रला
ई शुनला. तत्क्षण नर्क वार उद्धार होला ॥ ॥ नारद उवा
च ॥ जन्मान्तर सहश्रेण. तयो ध्यान समाधिना ॥ न राणां
क्षीन पापाणां. कृष्णे भक्ति प्रजायते ॥ ४१ ॥ नारद विंति

॥ पाण्डे ॥

॥ १५ ॥

गदाभया ॥ कोहिमनुष्यकृष्णभक्तिगर्हन् पापित्ताईभ
क्तिदुंदैन पापिसुखमायनि धनतुल्याउना कोइक्षाग
र्ह धनलेधर्मदुंदैन कृष्णभक्तिदुं न्यामनुष्यदुलोडुं
दैन माझाडुं छ तत्को १ जन्मविनायकि वडुतै सुखिदुं
छ कृष्णभक्तिनगर्णशायनजां एया कण क्वाधर्महोला
॥ ॥ प्रज्ञादउवाच ॥ नाथयोनि सहश्रेष्ठेषु येषु जाम्य
हं ॥ तेषु तेषो च राभक्ति रयुतास्तु सदा त्वयि ॥ ४२ ॥ हे
प्रभू श्रीकृष्ण अहं कह जार २ जन्म जान्छन् ताहात

॥ राम ॥

॥ १५ ॥

पानिकोभक्तिगर्णशकृन्नागरिदयाप्रसन्नदुनुहोला
॥ ॥ पुनः ॥ याप्रीतिरविमुक्ताणां विषयश्च एपायिणिः
॥ त्वामनुस्मरतानाथ हृदयानायसर्पतु ॥ ४३ ॥ प्रज्ञा
दलेविंतिगन्था ॥ हे परमेश्वर श्रीभगवान् तपानिको
चरणमानि श्रयभक्तिगर्णशकृन्नागरिदयागन्थाजा
वत् ॥ ॥ विद्वामित्र उवाच ॥ किंतस्य दानै किंतीर्थं कि
ंतयोभिकिमधरै ॥ योनित्यं ध्यायते देवनाशयनजग
दु ॥ ४४ ॥ विद्वामित्र भंदाभया ॥ जसनुष्यलेदिनप्र

॥ पाण्डे ॥

॥ १६ ॥

तिजडुरु नाशयण को ध्यान गणेश कन्या कण तिर्थ स्ना
नये शगत्या भद्रा श्री कृष्ण को ध्यान गत्या वडो पुण्य व ॥ ॥
यमदमि रुवाच ॥ नित्योत्सर्व सदा तेषां नित्यं श्री नित्य मंग
लं ॥ येषां हृदि स्थो भगवान् मंगलाय तनो हरि ॥ ४५ ॥ यम
दमिले भद्रा भया ॥ जस्मनु व्यले हरि को नाम मंगल गाव
ला तत्का हृदय मा कृष्ण ले वा स ग र्हे न तत्का गृहे मा स र्हे
आनन्द होला लक्ष्मि वृद्धि कुं कि न सदा मंगल होला ॥ ॥
भारद्वाज उवाच ॥ लाभ तेषां जय तेषां कुरु तेषां यश जय

॥ रामः ॥

॥ १६ ॥

॥ येषां मिन्दु वर श्याम हृदय स्थो जनार्दन ॥ ४६ ॥ भारद्वाज
को वचन क ॥ जस्को हृदय मा फल कुल जतो निर्मल क
तत्का हृदय मा श्री कृष्ण व स र्के न तत्कण सदा जय होला
॥ ॥ गौतम उवाच ॥ गो कोटि दानं ग्रहणे शुकाशी प्रयाग
गंगोदक कल्प वासि ॥ यज्ञायुतं मेरु सुवर्ण दाणं गोविन्द
नाम स्मरणे न तुल्यं ॥ ४७ ॥ गौतम विनिगद भया ॥ कोटि
गौ दान गत्या को ग्रहण मा काशी स्नान गत्या को मकर मा
प्रयाग गत्या को र सुमेरु यव त समान यज्ञ मा हि रण्य दा

॥ पाण्डौ ॥

॥ १७ ॥

एगत्या को यतिको जति पुण्य छे त्यो सवै प्रात समय मा गोवि
न्द जप्ता को वरोवर पुण्य छे ॥ ॥ अग्निरुवाच ॥ गोविन्देति
सदा ह्यानं गोविन्देति सदा जपं ॥ गोविन्देति सदा ध्यानं सदा
गोविन्द कीर्तनं ॥ ४८ ॥ अग्निले सा एगत्या ॥ ह्यान दान
गर्दपनि गोविन्द जप्नु जायपनि गोविन्द को गर्नु ध्यान
पनि गोविन्द को गर्नु सदा सर्वदा गोविन्द जप्न सक्याटेरै
पुण्य छे ॥ ॥ पुन ॥ त्रियक्षरं परं ब्रह्मा गोविन्देति त्रिय
क्षरं ॥ तस्मादुच्चरितं येण ब्रह्मभूपाय कल्पते ॥ ४९ ॥ पुन ॥

॥ राम ॥

॥ १७ ॥

॥ कशैले भन्या त्रियक्षर पाई कए उशैले मोक्ष दुं छे गोवि
न्द का त्रियक्षर जप्ता दुख प्र सुख प्र दुं छे परलो क उद्धार
होला पितृ वैकुण्ठ जान्छे न आपु कन खग वास होला ॥
श्री वादरायण उवाच ॥ अच्युत कल्पवृक्षोसौ अनन्त काम
धेनवा ॥ विन्तामणि स्य गोविन्द हरि नामै विचिन्तये ॥ ५० ॥
श्री वादरायण लेखिनि गन्या ॥ हे अच्युत कल्पवृक्ष अनन्त
काम धेनव हे विन्तामणि गोविन्द हे हरे तमो नाम लिना
कए विषय काल मा अचेत भयापनि भुचेत होला यत्ना

॥ पाण्डौ ॥
॥ १८ ॥

परमेश्वरको बारम्बार नमस्कार ॥ ॥ हरि उवाच ॥ जयति
जयति देवो देवी नन्दो यं जयति जयति कृष्णो वृक्षिवं
शत्रुदिप ॥ जयति जयति मेघस्यामलकोमलांगो जयति
जयति पृथ्विभारनासो मुकुन्द ॥ ५१ ॥ हरिलेखन उवाच ॥
न्या ॥ हे सर्वस्वरूपदेव देवकीका पुत्र नन्ददेवकीको उद्धार
गणपति कृष्ण विष्णुशरीर मेघवर्णभयाका पृथ्वि उद्धार
गर्ग्यः स्यामवर्णभयाका पृथ्विको जयगर्ग्यः एता परमे
श्वर विस्वरूप मुकुन्दको नमस्कार ॥ ॥ विष्णु उवाच ॥

॥ राम ॥
॥ १८ ॥

वाच ॥ श्रीमन्नुसिंहविभवे गरुडधजाय तापत्रयोयशम
नाय भवौषधाय ॥ कृष्णाय वृश्चिकजलानिभुजंगशेखा
केशवथाय हरये गुरवे नमस्ते ॥ ५२ ॥ विष्णु उवाच ॥
न्या ॥ हे श्रीराम नरसिंहरूप गरुडवाहण गद्यधारि वि
शायति पद्मधारि यत्नोत्तरूप चतुर्बाहु श्रीकृष्ण वृश्चिक
सर्पकोविदमारि साधगर्ग्यः केशव हरि जगत्का गुरु य
ता परमेश्वरको नमस्कार ॥ ॥ हविर्होत्र उवाच ॥ कृष्ण
वदीय पदयंक जयं जरांते अथैव मे विशतुमानसराजहं

॥ घाण्डौ ॥
॥ १२ ॥

॥ प्राणप्रयानशमयकफवाटपित्रै. कंठावरोधनविधौ स्मर
णंकुतले ॥ ५३ ॥ **हविर्होत्रलेविंतिगन्था ॥** हे कृष्ण. तिमिले
बनायाको. योपिंजरा. यशौपिंजरा मा. राजहंसवत्पामा. क
फवाटपित्रले ज्वरभयाकाशमयमा. बावामहतारी. दाजु
भाई. इष्टमित्रकशैले उद्धारगर्नशक्रुक्तेन. उद्धारगण्योत
यात्रि १ छौ. हे परमेश्वर. यत्ता श्री कृष्णको. वास्वा रनम
त्कार ॥ **॥ विदुर उवाच ॥** हरिर्नामैव नामैव. नामैव मजी
वन ॥ कलौ नास्तेव नास्तेव. नास्तेव गतिरन्यथा ॥ ५४ ॥ वि

॥ राम ॥
॥ १२ ॥

दुरलेभन्या ॥ हे परमेश्वर. तयात्रिको नमत्कारको आसमा
जीवमेशोक्त. अर्काको आसकै न. मकनतयात्रिकाचरणको
भक्तले मोक्षदिमकणदयाशश्रुहवत् ॥ **॥ वशिष्ठ उवाच ॥**
कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचा प्रवर्तते भस्मिभवन्नित
स्यासौ महापारककोतये ॥ ५५ ॥ **वसिष्ठलेविंतिगन्था ॥** ज
स्मनुष्यलेमंगलवनायापनि. श्री कृष्णको नाम स्मरणकुं
न्यामंगलवनाउंछ. तत्कोपायसर्वे भस्मकुंछ ॥ **॥ अरु
धनु उवाच ॥** कृष्णाय वासुदेवाय. हरये परमात्मने ॥ प्रण

॥ पाण्डौ ॥

॥ २० ॥

तत्केशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ५६ ॥ अरुंधतपूले
भनिं ॥ हे श्रीकृष्ण भनि नामलिंगा कण पापसर्वैकुटि
क जलनुष्पले हरिको नामसंगलगर्णिक उक्तोपाप
सर्वै जलैवायुले वादलफाट् तल्लैवापसर्वै उडिजां
तत्सु अर्थगोविन्दको नामवारम्बारलिनु ॥ कश्यप
उवाच ॥ कृष्णानुस्मरणदेव पापसंघटयं जरं शतधा मे
दमाप्नोति गिरिवज्रहतो यथा ॥ ५७ ॥ कश्यपलेभन्या ॥
श्रीकृष्णकोषणमगर्ण्यामनुष्पको पापसंचनागत्या

॥ राम ॥

॥ २० ॥

कोसर्वै जलैवजुलेष्वतथं उषंडकुन्ध पापपनितसैहो
ला ॥ दुष्येधिन उवाच ॥ जानामि धर्मनचमेष्ववृत्ति जा
नामि पापं नचमेनिवृत्ति ॥ केनापि देवान हृदि स्थितेन य
थामियुक्तो स्मितथा करोमि ॥ ५८ ॥ दुष्येधिन भवामया ॥
जुन जुन कर्म आमूले गयो उदुं क धर्मगत्या धर्मफल
होला पापगत्या पापफलमिल्ले जो कर्म क्वहेरि पर
मेश्वर श्रीकृष्णले भुषभोगदिक् न यत्तापरमेश्वर श्रीकृष्ण
को नमस्कार ॥ पुनः ॥ यत्र खगुणदोषेण संस्पृतां सधु

॥ पाण्डो ॥

॥ २१ ॥

सूदन अहमेवमहं तु मम दोषो न दीयते ॥ ५२ ॥ पुनरुद्योधि न
भंङ्ग ॥ हे परमेश्वर श्री कृष्ण तयात्रिको ग रं यो मग बु
लाई दोष नहि हे मधुसूदन दोष लाया यनित यात्रिका चर
नैमाक्षु तयात्रिका एवार म्मार न मत्कार ॥ ॥ भृगु उवाच ॥
नामैव तव गोविन्द नाम तोत्र शताधिकं ॥ ददात्युच्चारणं मु
क्ति भवानष्टांग योगत ॥ ६० ॥ भृगु लेभ न्या ॥ कोहि परमा
धिले तत्त्व जानिक ए ग्विन्द को नाम पाडव गीता ये कश
य १०४ आठ आवर्त पाठ गरिक ए ध्यान गत्या अष्टोत्र शये

॥ रामः ॥

॥ २१ ॥

वार्थ साधक ॥ ६४ ॥ दाल भले भदा भया ॥ जलानुब्यले वि
ष्णु भक्ति नगरि अरु सर्व साध नागत्यापनिका प्रयोजन
क नमो नारायणो नाम विष्णु को जपु र सर्व साधक कुं क
॥ अरु मंत्र जान्याले का प्रयोजन क जानि जन लेता विष्णु
कै भक्ति गर्नु ॥ ॥ वैश्यायण उवाच ॥ यत्र जोगेश्वर कृष्णो
यत्र पार्थो धनुर्धर ॥ तत्र श्री विजयो भूति कृवानी निर्मति
र्मम ॥ ६५ ॥ वैश्यायण ले भदा भया ॥ जाहा जोगेश्वर वाहा
श्री कृष्ण कुं क न जाहा धनुर्धर वाहा अर्जुण कुं क न जाहा

॥ पाण्डे ॥

॥ २३ ॥

श्रीकृष्णवत्सल-ताहालक्ष्मीदुन्दीन-लक्ष्मीभयाकाठाउं
मास्थिरहोला ॥ ॥ अगिरउवाच ॥ हरिहरतिपापाणि दुष्ट
चित्तैरपि स्मृत ॥ अनिदयापिसंस्पृष्टा दहत्येव हि पावक
॥ ६६ ॥ अगिरले आज्ञागदभया ॥ जलानुषले मनस्वीरग
रिहरिको नाम जम्बू उल्लोपायजतिहू सवैभस्महोई जा
न्हू ॥ ॥ पराशर्यउवाच ॥ सकुडुच्चरितं येन हरिरित्य
क्षरद्वयं ॥ वद्वपरिकरत्नेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥ ६७ ॥ प
राशर्यले आज्ञागत्या ॥ जलानुषले भरिसक्यगरि तपत्रि

॥ रामः ॥

॥ २३ ॥

को नाम दुइ अक्षर हरि भनिज प्राकरा उल्लानुषकण स
न्सारकापापकोतुलोनदियारगरि शुबलेवैकुण्ठ जान्हू ॥ ॥
पौलस्त्यउवाच ॥ हे जिह्वेरससारज्ञ सर्वदामधुरं प्रिय ॥ ना
रायनायमपियुष्मं पिवजिह्वे निरंतरं ॥ ६८ ॥ पौलस्त्यले आ
ज्ञागत्या ॥ हे जिभ्रासदाकालमधुरवचनबोलु छिचरोनद
नु सदाकालैगोविन्दकोनिर्मलनाममात्रलिनु नारायण
कानामले मुक्तभैवैकुण्ठवासमिल्ला ॥ ॥ वाशउवाच ॥ स
त्यं सत्यं पुनसत्यं भूजमूत्थाय चोच्यते ॥ न वेदावपरं शास्त्रं

॥ पाण्डो ॥

॥ २४ ॥

न देव के शवात्परं ॥ ६२ ॥ व्याशले आशागत्या ॥ विदुर को वच
न सत्य सत्य गरिमान् जानि जन ले विष्णु कै भक्ति गर्नु विष्णु
कै नाम भया को शाख पट्टु शुनु ॥ ॥ धन नरि उवाच ॥ अ
च्युत नन्द गोविन्द नामोच्चारण भेष जात ॥ नश्यति सकला
रोगा सत्यं सत्यं ब्रजाम्पहं ॥ ७० ॥ धन नरि ले आशागत्या ॥
हे अच्युत अनन्त गोविन्द तया त्रिको नाम लिप्ता कला धर्म
कर्म दान तपस्या अरु देवता को रोवा तीर्थ जानु पदै न श्री
नारायण का नाम मात्र ले धर्म कर्म औषधि यनि विष्णु को

॥ राम ॥

॥ २५ ॥

नाम लिखा यहि पाप दुःख रोग सबै कुटि भै वै कुराव सहो
ला ॥ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ साहानिस्त नमहा हि दुःसाचां ध
जड मुकटा ॥ यन्मुकुर्त क्षणं वापि वासुदेवं न विनयतः ॥
७१ ॥ मार्कण्डे ले आशागत्या ॥ जह्वे स्वर्ग मोक्ष सुख दिव्या
जगत्कागुरु हरि को चिन्त नान गण लाई क्या गति होला
जानि जन ले पाडौ गीता पाठ गरि सधै भक्त गण शक्य
ले घर मा रावि नमस्कार गण लाई बडो पुण्य ॥ ॥ अ
राज उवाच ॥ निमिषं निमिषा द्रुमा प्राणिणं विष्णु चिन्त

॥ पाण्डौ ॥

॥ २५ ॥

नं ॥ क्रतुकोटि सहस्राणि ध्यानमेकं विसिष्यते ॥ ७२ ॥ अगस्त्य
मुनिले आशागत्या ॥ जस्मनुष्यले विष्णुकोत्तुतिगरि ध्यान
गर्हन् उश्वायिकोटि यज्ञगत्या कोपुण्यदुं क ॥ ॥ वामदे
व उवाच ॥ मनसा कर्मना वाचा यस्मरंति जनार्दन ॥ तत्र
तत्र कुरुक्षत्रं प्रयागे नैमिषं वनं ॥ ७३ ॥ वामदेव आशाग
दभिया ॥ जाहा जाहा हरिकोकथादुं क ॥ ताहा कुरुक्षत्र प्र
याग जमुना कमलायति सवै तीर्थ सवै गंड कि केडार गया
पुष्करणि नेरि कोटि देवता देवी गण निमिखारण्य सवै आ

॥ राम ॥

॥ २५ ॥

इकण हरिकथा मुनिरहं कुरु ॥ ॥ शुक्र उवाच ॥ आलोच्य
सर्वशास्त्राणि विचार्यैवं पुनः पुनः ॥ इदमेकं समुत्पन्नं धेयो
नारायणः सदा ॥ ७४ ॥ शुक्रदेव आशागदभिया ॥ मैले सम
स्तशास्त्रहेत्या पुराणश्रुत्या विष्णुका ध्यान जतिपुलोके हि
रहेन क ॥ तस्य अर्थज्ञानी जनले विष्णु कै ध्यान गर्नु ॥ ॥
श्रीमहादेव उवाच ॥ शरिरे जर्जरिभूते व्याधिग्रस्ते कलेवरे
॥ औषधं जाद्वीत्ययं दैवो नारायणो हरि ॥ ७५ ॥ श्रीमहा
देवले आशागत्या ॥ जस्म विष्णुको ध्यान गर्ण शकृ नान् उ

॥ पाण्डौ ॥
॥ २६ ॥

स्कोशरिरसदासर्वदानिर्मलकुनुक्क. रोगव्याधसवैजांक्
वैद्ययनिविष्णुकुनुक्क ॥ ॥ शौनक उवाच ॥ भोजने काज
नेचिन्ता. वृथाकुर्वन्ति वैष्णवा ॥ योसौ विश्वं भरो देव. स भक्ता
न किमुपक्षेते ॥ ७६ ॥ शौनक ले आशागत्या ॥ भोजनगर्दा
यनिजयविष्णुभनि अर्थन नगरिषान्तामनुष्यको जन्म
वृथाहो. हरिकथा कहं दामा. अकीर्तिरचितगरिषाम
नुष्यनर्कजांक्. मनुष्यको जन्म भै कण. अलि कविष्णुको
भक्तिनगर्ण्य लाई क्या उपकार. क्या जुगुति होला ॥ ॥ ए

॥ राम ॥
॥ २६ ॥

वंब्रह्मादयो देवा. त्रैलोक्यश्च तपोधन ॥ कीर्तयन्ति सुरभ्रे
ष्ठा. देवना रायण सदा ॥ ७७ ॥ तस्य अर्थः ॥ ब्रह्मा महेश्वर दे
वलोक. तपोधन. त्रिलोक ले. परमेश्वर ना रायण कण
श्रेष्ठ गरिषा व्याकुनुक्क ॥ ॥ शनकुमार उवाच ॥ यस्य हस्ते
गदा वक्रं गरुडो यस्य वाहणं ॥ शंखचक्रगदायुधं. समे वि
ष्णु प्रसीदतु ॥ ७८ ॥ शनकुमार ले आशागत्या ॥ जप्ते शंख
चक्रगदायुधधारण गरि. गरुड वाहन गरि वक्ष्या ना रा
यण कण नमस्कार गण्य. पांडव गीता याठ गण्य को देह प

॥ पाण्डो ॥

॥ २७ ॥

वित्रदुन्दु. आयुद्विदुन्दु. वडो. पुण्यहोला. धनधान्यदुन्दु.
शरिरनिर्मलदुन्दु. लोकलेमान्या. संग्रामजित्वा. यापनासि
न्याशांतिगन्तुतिहो. ^{संग्रामजित्वा} ॥ इदं वित्रं मायुष्यं पुण्यं यापय
एतन्नं ॥ यपठेत्प्रातरुत्थाय वैष्णवस्तोत्रमुत्तमं ॥ ७२ ॥ **न**
स्यार्थः ॥ कोहिमनुष्यप्रातउठि. भुविभै. श्रीविष्णुकोनमत्का
रगारि. पाण्डवगीतास्तोत्र. पाठगारि. कशैलेपाठगन्तुकोसु
निरहंरु. कसैलेपुष्टकतुल्याईराष्ट्रक. लेषन्यापदु
न्या. सुन्या. पुष्टकतुल्याईधरमाराष्ट्रन्या. इत्यैजनाक.

॥ रामः ॥

॥ २७ ॥